Part-1

प्रश्न 10. परिणीता कथा संग्रहकँ 'चिर - सधवा' कँ सारांश लिखू ।

उतर- वर्तमान आर्थिक युगक यथार्थ चित्रण कथाकर चिर-सधवा मे कएने छथि । गोपेश टाटा- स्टील प्लान्टमे नौकरी करैत छल । संयोगवस कारखाने मे ओकर हाथ कटि गेलै । कम्पनीसँ जे टाका भेटलै से सभ इलाजमे लागि गेलै । आब गोपेश बेरोजगार , अपंग भ घर वैसि गेल । एसगर पत्नी लक्ष्मी घर - गृहस्थीक गाड़ी खीचि रहल अछि । गोपेश आब सतत् भविष्यक चिन्तामे निमग्न रहैत अछि । पत्नी लक्ष्मी मैट्रीक पास अछि ओ हरदम बुझाबैत छैक चिन्ता कैलासँ किछु नहि हैत शनै: शैने: सभ ठीक भ जेतै । मुदा आइ लक्ष्मी गोपेशक मुहँ सँ निकलल आह सँ दु:खी भ गेलीह । गोपेश कहैत अछि - एकटा ठेलुआ , बेरोजगार , अपाहिज आदमी जे अपना

घरक लेल नकारल भ गेल । प्रशन्न कोना रहि सकैत अछि । अरे दुर्घटना ककरा संग नहि होइत अछि । जँ हमरा संग भेल रहैत त अहाँ की करितहुँ ? जिनगीसँ एना हारि नहि मानल जा सकैछ । अहाँ कने दुनिया देखियो , अहुँ सँ बेसि दु:खी लाचार लोक छै । अरे नोकरी नहि भेटत त कोनो दोकान खोलि लेव । हमहूँ त मैट्रीक पास छी । किछु ने किछु कइये लेब ।

कतवो लक्ष्मी

पतिकेँ बुझबैत अछि मुदा गोपेश से पूर्वक आत्मविश्वास जागैत नहि छैक । नोकरी नहि भेटत त दोकान खोलि लेब । यैह लक्ष्मीक कथ्य गोपेश केँ व्याकुल कर लगलनि । कारण टाटा चाहि दोकानक लेल । टाका सभटा इलाजमे खर्च भ गेल छलैक । तखन दोकान खोलब कोना सम्भव भ सकैत छैक । आब गोपेशकेँ मन मे सदैव टाका-टाका केँ विचार अबैत रहैत छैक । आब गोपेश जतेक एहि विचारसँ भगवाक प्रयास करैत अछि । ओ आओर मजबूत

भेल जाइत छैक । एहि विचारमे ओझराएल गोपेश टहलैत - टहलैत एकटा पार्क कँ बेंच पर बैसि सुस्ताय लगैत अछि । ओतहि एकटा परिचित लोक सेहो बैसल छल । गोपेश गप्प करबाक उदेश्यसँ ओहि व्यक्तिसँ पूछैत अछि - पार्कक बाहर ओहि बिल्डिंग पर एतेक भीड़ कियैक अछि । ब्ल्ड बैंक छियै , अपन-अपन खून बेचबा लेल जमा भेल अछि । लोक खून कियैक बेचैत अछि ? टाका लेल खून बेचैत अछि । अरे ई सब त मात्र खून बेचैत अछि , टाका लेल त लोक अपना देहक अंगो बेचैत अछि । दोसराक कोन बात हमही टाका लेल अपन किडनी बेचने छी, बेटीक बियाहक लेल । भगवन सभकेँ दू - टा किडनी देने छथिन । एको किडनी पर लोक सामान्य जीवन जीबैत अछि । एहि वार्तासँ गोपेश कँ बड़ प्रशन्नता भेल छलैक ।

धीरे-धीरे लक्ष्मीक अवश्था भ गेलनि ओ आब ओछाओन ध लेलनि । अन्न छुटि गेलनि ।

एक दिन लक्ष्मी बेटा पोतोह कैँ लग मे बैसा क कहने छलीह - बेटा हम कोनो तीर्थ नहि जाइत छलहुँ , हम त अपन अराध्यदेव कैँ तकैत रहलहुँ । हमर त सभसँ पैघ तीर्थ वैह जगह छल जाहि जगह पर हम हुनका छोड़ि क आबि गेल छलहूँ ।

सोचने छलहुँ अन्तिम क्षण अहाँ लग रहितहुँ मुदा आब नहि ....। ताहू दिन अहाँ लेल हमरा सँ पैघ टाका छल , एखनहुँ अपन ....सुख । अहाँ चिर सधबा रहू । गोपेश । “ बेटा हम चिर यात्रा पर जा रहल छी । ”